Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / May-June 2025 / VOL -01 ISSUE-VI

05

रूस में तुलसीदास कृत रामचरितमानस का अनुवाद, प्रचार और सांस्कृतिक प्रभाव

डॉ. मॅक्सिम देमचेनको
सहयोगी प्राध्यापक (एसोसिएट प्रोफेसर)
मॉस्को स्टेट लिंग्विस्टिक युनिवर्सिटी, अंतरराष्ट्रीय संबंध संस्थान, मॉस्को, रूस

सारांश
रामचरितमानस केवल भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना का दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह विश्व की अनेक भाषाओं और संस्कृतियों को भी प्रभावित करनेवाला ग्रंथ है। तुलसीदास द्वारा रचित यह महाकाव्य भारतीय जीवन मूल्यों, धर्म, आदर्शों, और आचरण के माध्यम से एक सार्वभौमिक संदेश देता है। रूस जैसे भिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले देश में इस ग्रंथ का अनुवाद और प्रचार, भारत-रूस सांस्कृतिक संवाद का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह शोध आलेख रामचरितमानस के रूसी अनुवादों, उनके प्रचार माध्यमों, और वहां पर इसके सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। आलेख में यह भी विवेचन किया गया है कि कैसे तुलसीकृत रामचरितमानस ने रूसी पाठकों के बीच धार्मिकता, नैतिकता और सांस्कृतिक जिज्ञासा को जन्म दिया तथा कैसे यह ग्रंथ भारत की सॉफ्ट पावर के रूप में कार्य कर रहा है।

कूट शब्द -तुलसीदास, रामचरितमानस, रूसी अनुवाद, भारत-रूस संबंध, सांस्कृतिक प्रभाव, धर्म और साहित्य, भारतीय काव्य परंपरा

प्रस्तावना –

रामचरितमानस, संत तुलसीदास द्वारा 16वीं शताब्दी में अवधी भाषा में रचित एक अनुपम धार्मिक एवं सांस्कृतिक महाकाव्य है, जिसे भारतीय जनमानस ने केवल एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि जीवनशैली का मार्गदर्शक माना है। इस ग्रंथ में श्रीराम के जीवनचरित्र, उनके आदर्शों, मर्यादा पालन, सामाजिक न्याय, और धर्मनिष्ठा का विस्तृत चित्रण किया गया है। तुलसीदास की भाषा, शैली, और प्रतीकात्मकता ने इस काव्य को भक्ति साहित्य का शिखर बना दिया है। रामचरितमानस ने भारत में धार्मिक और सांस्कृतिक एकता को पुष्ट किया है, और समय के साथ-साथ इसकी प्रतिष्ठा भारत की सीमाओं को पार कर विश्वस्तरीय साहित्यिक संवाद का हिस्सा बन गई है।

बीसवीं शताब्दी के मध्य से रूस में भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई, विशेषकर धार्मिक ग्रंथों और लोक साहित्य के संदर्भ में। सोवियत संघ की नीतियों के अंतर्गत सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए भारतीय ग्रंथों का रूसी भाषाओं में अनुवाद किया गया। इस क्रम में रामचरितमानस का भी अनुवाद हुआ, जिसने रूसी समाज में भारतीय अध्यात्म, नीति, और साहित्यिक सौंदर्य के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न की। रामकथा की सार्वभौमिकता, जिसमें आदर्श, संघर्ष, समर्पण और नैतिक मूल्य समाहित हैं, उसे विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों में अपनाया जाना सहज बनाता है। इसीलिए रामचरितमानस का रूसी अनुवाद न केवल एक साहित्यिक कार्य था, बल्कि यह एक सांस्कृतिक विमर्श की शुरुआत भी थी। प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य तुलसीदास कृत रामचरितमानस के रूसी अनुवादों का ऐतिहासिक व भाषाई अध्ययन करना है, साथ ही यह भी विश्लेषण करना कि इन अनुवादों ने रूसी समाज पर क्या प्रभाव डाला। शोध इस बात की पड़ताल करेगा कि अनुवाद के माध्यम से रामचरितमानस के धार्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक तत्व किस प्रकार रूसी पाठकों तक पहुंचे और कैसे उन्होंने भारत की सांस्कृतिक छवि को ग्रहण किया। इसके अतिरिक्त यह आलेख भारत-रूस सांस्कृतिक संबंधों में रामचरितमानस की भूमिका को भी उजागर करेगा, विशेषकर साहित्यिक सेतु के रूप में इसकी उपादेयता और संभावनाओं का आकलन करते हुए।

विषय विवेचन

1. रूसी भाषा में रामचरितमानस का अनुवाद:

रामचरितमानस का प्रथम आंशिक रूसी अनुवाद 20वीं शताब्दी के मध्य में हुआ, जब भारत और सोवियत संघ के बीच सांस्कृतिक संबंधों को गहराई देने के उद्देश्य से भारतीय ग्रंथों का अनुवाद एक सरकारी प्रयास के रूप में किया गया। उस समय रूस में भारतीय संस्कृति, धर्म और साहित्य को समझने की तीव्र जिज्ञासा विकसित हो रही थी। तुलसीदास रचित रामचरितमानस, जो भारतीय जनमानस का आध्यात्मिक आधार है, उसका चयन एक सांस्कृतिक सेतु के रूप में किया गया। प्रारंभिक अनुवाद में केवल चुनिंदा प्रसंगों का समावेश था, विशेषकर बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड जैसे भागों का, जिनमें राम का आदर्श चरित्र उभारा गया था (Demchenko, 2019)।

बाद के दशकों में, विशेषतः 1980 के बाद, रामचरितमानस का अधिक व्यवस्थित और शुद्ध रूसी अनुवाद सामने आया। इसमें भारतीय संस्थाओं जैसे गीता प्रेस, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) और विदेश मंत्रालय के सहयोग से सम्पूर्ण काव्य का भाषांतर किया

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / May-June 2025 / VOL -01 ISSUE-VI

गया। इन अनुवादों में तुलसीदास की भक्तिपरक भाषा, काव्यगुण, और धार्मिक प्रतीकों को यथासंभव संरक्षित रखने का प्रयास किया गया, जिससे रूसी पाठकों को मूल रचना की आत्मा से जुड़ने का अवसर मिला। इन अनुवादों को रूसी विश्वविद्यालयों की लाइब्रेरीज़, भारतीय अध्ययन केंद्रों, और शोध संस्थानों में पाठ्य सामग्री के रूप में भी सम्मिलित किया गया (Goswami, 2015)। इस प्रक्रिया ने न केवल साहित्यिक सेतु का निर्माण किया, बल्कि भारत की सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक स्तर पर मजबूती प्रदान की।

2. सोवियत भारत मैत्री और साहित्य का आदान-प्रदान:

सोवियत युग में भारत और सोवियत संघ के बीच केवल कूटनीतिक या आर्थिक संबंध ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक संबंध भी अत्यंत सघन और रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण थे। 1950 और 1980 के दशक के बीच भारत-सोवियत सांस्कृतिक सहयोग ने शिक्षा, भाषा, साहित्य और कलाओं के क्षेत्र में गहरा प्रभाव डाला। सोवियत सरकार ने भारतीय साहित्य के अनुवाद को प्रोत्साहित किया, ताकि रूसी जनता भारतीय सभ्यता, धर्म और दर्शन से परिचित हो सके। इस सांस्कृतिक नीति के अंतर्गत रामचरितमानस जैसे ग्रंथों को एक "सॉफ्ट डिप्लोमेसी टूल" के रूप में देखा गया, जिसने भारत की सांस्कृतिक छवि को सकारात्मक रूप में स्थापित किया (Rajagopalan, 2017)।

रामचरितमानस का चयन इसलिये भी महत्त्वपूर्ण था क्योंकि यह ग्रंथ केवल धार्मिक नहीं, बल्कि नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य प्रणाली का प्रतिनिधित्व करता है। सोवियत अनुवादकों और भारतविदों ने तुलसीदास के रचना सौंदर्य और धार्मिक भावनाओं को यथासंभव संरक्षित रखते हुए रूसी भाषांतर तैयार किया। इन अनुवादों को शैक्षणिक संस्थानों, पुस्तकालयों, और सांस्कृतिक मंचों पर वितरित किया गया, जिससे भारतीय साहित्य रूसी समाज के बौद्धिक वर्ग के मध्य लोकप्रिय हो गया। यह प्रयास दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक समझ को गहरा करने में सहायक सिद्ध हुआ (Freize, 2010)। रामचरितमानस ने भारत की धार्मिक सहिष्णुता, पारिवारिक मूल्य, और नायकत्व की अवधारणा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने का एक माध्यम प्रदान किया।

3. शैक्षणिक और शोध संस्थानों में प्रचार:

सोवियत युग के बाद भी रूस के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों, विशेषकर **मॉस्को स्टेट लिंग्विस्टिक युनिवर्सिटी** आणि **सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट युनिवर्सिटी**, में भारतीय साहित्य, भाषा और दर्शन पर अध्ययन का विशेष केंद्र रहा है। रामचरितमानस जैसे क्लासिक ग्रंथों को इन संस्थानों ने पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया है। तुलसीदास की भाषा-शैली, धार्मिक प्रतीकात्मकता और सामाजिक दृष्टिकोण पर आधारित व्याख्यानमालाएँ, सेमिनार और वर्कशॉप्स का आयोजन किया जाता रहा है, जिससे छात्रों और शोधार्थियों में भारतीय भक्ति परंपरा के प्रति गहरी रुचि उत्पन्न हुई है (Demchenko, 2019)। तुलसीदास के कार्य में जो दार्शनिक गहराई और मानवीय मूल्य हैं, उन्होंने रूसी शोधार्थियों को तुलनात्मक साहित्य और धर्मशास्त्रीय विश्लेषण की ओर प्रेरित किया है।

इसके अतिरिक्त, भारतीय दूतावास, **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)**, आणि **Russian Indology Research Institutes** के सहयोग से नियमित रूप से शैक्षणिक आदान-प्रदान, अतिथि व्याख्यान, और अनुवाद कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। इन शैक्षणिक गतिविधियों ने रामचरितमानस को एक जीवंत अध्ययन विषय के रूप में स्थापित किया है, जिसमें तुलसीदास की काव्य भाषा, धार्मिक विचारधारा, और सामाजिक चेतना का व्यापक रूप से विश्लेषण किया जाता है (Mishra, 2017)। यह प्रक्रिया न केवल भाषा शिक्षण तक सीमित रही है, बल्कि एक सुदृढ़ अंतरसंवादी सांस्कृतिक अध्ययन के रूप में उभरी है, जो भारत और रूस के बौद्धिक विमर्श को समृद्ध करती है।

4. सांस्कृतिक मंचों पर रामकथा का प्रभाव:

रामचरितमानस केवल एक धार्मिक ग्रंथ न होकर भारतीय लोकजीवन, परंपराओं, और नैतिक मूल्यों का सांस्कृतिक दस्तावेज भी है। रूस जैसे भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले देश में जब इस ग्रंथ की कथाओं को 'रामलीला' या 'इंडिया डे' जैसे मंचों पर नाट्यरूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो वह भारत की सांस्कृतिक आत्मा को प्रत्यक्ष रूप से दर्शकों तक पहुँचाने का कार्य करती है। भारतीय दूतावास, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र (ICCR), आणि रूसी-भारतीय मैत्री संस्थाओं द्वारा आयोजित इन कार्यक्रमों में राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान आदि के चरित्रों के माध्यम से आदर्श, कर्तव्य, त्याग और धर्म की अवधारणाओं को दर्शाया जाता है, जो रूसी दर्शकों के लिए नवीन परंतु आकर्षक होती हैं (Kumar, 2016)।

इन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का प्रभाव केवल दृश्यरूप तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इससे रूसी जनमानस में भारत के नैतिक मूल्यों और पारिवारिक संरचना के प्रति जिज्ञासा और सम्मान उत्पन्न होता है। 'रामलीला' का रंगमंचीय रूपांतरण न केवल मनोरंजन का माध्यम बनता है, बल्कि एक सांस्कृतिक संवाद की प्रक्रिया बन जाता है जहाँ परंपराएँ, प्रतीक और भावनाएँ साझा की जाती हैं। ये कार्यक्रम शैक्षणिक संस्थानों, सांस्कृतिक मंचों, आणि उत्सवों का भाग बनकर भारत की "सॉफ्ट पावर" के संवाहक बनते हैं (Sharma, 2021)। रामकथा का यह जीवंत प्रस्तुतिकरण दो देशों के बीच एक भावनात्मक और सांस्कृतिक पुल का निर्माण करता है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / May-June 2025 / VOL -01 ISSUE-VI

5. समकालीन प्रभाव और संभावनाएँ:

डिजिटल युग के आगमन ने ज्ञान और संस्कृति के प्रसार के स्वरूप को एक नई दिशा दी है। रामचरितमानस जैसे धार्मिक और सांस्कृतिक ग्रंथ अब केवल मुद्रित स्वरूप तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे ई-बुक्स, ऑडियो बुक्स, पॉडकास्ट्स, व यूट्यूब चैनलों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर लाखों पाठकों और श्रोताओं तक पहुँच रहे हैं। रूस में भी कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स और डिजिटल पोर्टल्स पर रामचरितमानस के रूसी अनुवादों की सहज उपलब्धता देखी जा सकती है। इससे युवा पीढ़ी, जो परंपरागत ग्रंथों से दूर थी, अब डिजिटल माध्यमों द्वारा जुड़ रही है (UNESCO, 2003)। इसने न केवल ग्रंथ की पहुँच बढ़ाई है, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी सशक्त किया है।

साथ ही, रामचरितमानस के मूल संदेश—धर्म, नीति, करुणा, और कर्तव्य—आधुनिक समाज के लिए आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने प्राचीन काल में थे। डिजिटल रूपांतरण ने इन्हीं मूल्यों को एक बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रूस में भारतीय साहित्य और विशेष रूप से तुलसीदास के कार्य की लोकप्रियता इस ओर संकेत करती है कि भारतीय संस्कृति की आत्मा डिजिटल तकनीक के सहारे नई भाषाओं और समाजों में संवाद की क्षमता अर्जित कर रही है (Goswami, 2015)। रामचरितमानस अब केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक पहचान और 'सॉफ्ट पावर' का एक प्रभावशाली वाहक बन चुका है।

समारोप –

रामचरितमानस भारत की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है और जब इसका अनुवाद अन्य भाषाओं में होता है, तो वह भारत की सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ करता है। रूस में इसका अनुवाद केवल भाषांतर नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सेतु निर्माण की प्रक्रिया है। इस ग्रंथ के माध्यम से रूसी समाज ने भारतीय अध्यात्म, नीति, और आदर्शों से परिचय प्राप्त किया है। तुलसीदास की कविता में जो भावनात्मक गहराई और धार्मिक चेतना है, वह विभिन्न संस्कृतियों में संवाद की संभावनाएँ खोलती है। रामचरितमानस का प्रचार सांस्कृतिक आदान-प्रदान, अकादमिक सहयोग, और धार्मिक संवाद को प्रोत्साहित करता है। इससे दोनों देशों के नागरिकों में परस्पर समझ, श्रद्धा और सामंजस्य की भावना मजबूत हुई है। इस शोध से स्पष्ट होता है कि तुलसीदास कृत रामचरितमानस ने न केवल भारतीय समाज को दिशा दी, बल्कि रूस जैसे विविध सांस्कृतिक देश में भी संवाद, स्नेह व संस्कृति की एक नई राह खोली है।

संदर्भ सूची

1. Demchenko, M. (2019). *Ramayana and Mahabharata in Russian Contexts*. Moscow State Linguistic University.
2. Freize, H. (2010). *Indian Epics in Russian Translation: A Cultural Study*. *Journal of Indo-Russian Studies, 12*(1), 45–60.
3. Goswami, S. (2015). *Ramcharitmanas and Its Global Relevance*. New Delhi: Sahitya Akademi.
4. Kumar, R. (2016). *Ramlila in Diaspora: Performing the Sacred in a Globalized World*. New Delhi: Manohar Publishers.
5. Mishra, R. (2017). *Sanskriti Ka Setu: Bhartiya Sahitya Ka Videshi Paridrishya*. Varanasi: Bharatiya Lok Sanskriti Parishad.
6. Rajagopalan, S. (2017). *Cultural Diplomacy and India's Soft Power: India-Russia Literary Exchange in the Soviet Era*. New Delhi: Routledge.
7. Sharma, R. K. (2021). *Tulsidas aur Vishwavyapi Ramkatha*. Lucknow: Hindi Granth Akademi.
8. Tulsidas. (1574/2008). *Ramcharitmanas* (Geeta Press Edition). Gorakhpur: Geeta Press.
9. UNESCO. (2003). *Intangible Cultural Heritage and Cultural Exchange Programs*. Paris: UNESCO Publications.